भारत वर्ष में तीन अनूठी शक्तियाँ

रामकुमार वेदाचार्य,
हरियाणा,– 126111

बेटी बचाओ, वृक्ष बचाओ और बचाओ पाणी।
इन तीनों के बिना जगत में, कुछ ना आणी–जाणी।।

1. तीन काल और तीन ख्याल गुण तीन–तीन की लड़ हो।
   इन तीनों को राखण–खातिर तीन की बड़ी पकड़ हो।।
   अंकुर धुर से लाई आई बेटी सृष्टि की जड़ हो।
   पात फूल फल कहाँ मिलेंगे जब जड़ में ही गड़बड़ हो।।

बिना बेटी के पतझड़ हो, बेटी हो ऋतु सुहाणी।
बेटी बचाओ, वृक्ष बचाओ, देश बचाओ पाणी।।

2. जीवन दाता सच्चे मित्र मेल बिगाड़ो मतना।
   प्यार का तार बाँध नर घर से बाहर लिकाड़ो मतना।।
   जीवन में पेड़ पाँच लगाओ, ओर लगे उखाड़ो मतना।
   सिंगार उतार कर धरती माँ के, अंग उधाड़ो मतना।।

कर्म और धर्म उजाड़ो मतना, कथा सुणाऊँ स्याणी।
फिर पछताओ दुख पाओ, जब पड़ैगी मुँह की खाणी।।

बेटी बचाओ, वृक्ष बचाओ और बचाओ पाणी।

3. स्वभाव बड़ा सरल दल, बल का जल जैसा को एबल नाहीं।
   जल जैसी कहीं नहीं शान्ति इस जैसी हलचल नाही।।
   इसा लजीज, खनिज, बीजकोय, सीज इसा रसीला फल नाहीं।
   सब रत्नों में महारत्न है, इस रत्न–सा रत्न असल नाहीं।।

जल नाहीं तो कल नाहीं, सत पथ कुदरत की वाणी।
बेटी बचाओ, वृक्ष बचाओ और बचाओ पाणी।

4. तीन रंगों–से तिरंगा हमारा, प्यारा हिन्द महान।
   ग्रंन्थ शास्त्र लेख देख मेख मीन वारदान ।।
   धर्मदीन बिन, तीन हीन, लव लीन हुए हैरान।
   नगर अलेवा सुख देवा मिलै सेवा तै सद ज्ञान।।

रामकुमार तनैं सार मान, लिखैं विदवान कहाणी।
बेटी बचाओ, वृक्ष बचाओ और बचाओ पाणी।